इस किताब के मालिकः

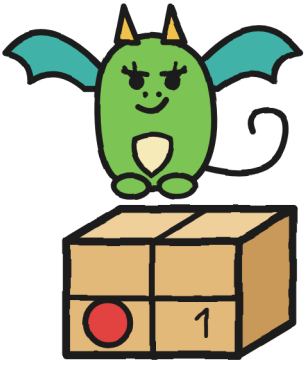
_____

और किसी का नहीं। –ज.

नामुमकिन डिलीवरी · 1

यह पार्सल काटता है

Lui Eriksson



साइज़ XL · सचित्र उपन्यास · 13+

नामुमकिन डिलीवरी 1
यह पार्सल काटता है

लेखन और चित्र: Lui Eriksson

हिन्दी संस्करण: LinguAula

साइज़ XL · सचित्र उपन्यास · 13+

पहला संस्करण: 2026

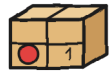
© 2026 Lui Eriksson · info@linguaula.com

कक्षा और घर के लिए खुलकर फ़ोटोकॉपी कर सकते हैं।

फ़ॉन्ट: Andika, Patrick Hand, Caveat, Courier Prime, Kalam, Dekko और Hind (SIL OFL लाइसेंस)।



हर अध्याय का अभ्यास
linguaula.com *पर करो*



अध्याय 1

जो पहुँचाया नहीं जा सकता

यह डायरी शिफ्टिंग वाले डिब्बे नंबर 14 से निकली। डिब्बे पर "रसोई" लिखा था, मोटे मार्कर से और जल्दी में लिखने वाले किसी इंसान की लिखावट में। अंदर एक चम्मच तक नहीं थी: बस यह डायरी थी, एक मोज़ा और रबर का एक मेंढक जो किसी का नहीं है। मैंने मम्मी से पूछा। मैंने मेंढक से पूछा। उसका कोई दावेदार नहीं।

डायरी पर दावा मैंने ज़रूर किया। पहले पन्ने पर मैंने उसका शीर्षक लिखा, बड़े-बड़े अक्षरों में, ताकि शुरू से ही बात साफ़ रहे:

डिलीवरी डायरी, गुनी की। निजी।

"निजी" का मतलब है कि इसे पहले मैं पढ़ूँगी। –ज.

जब मैंने "निजी" लिखा था, तब यह हरा नोट वहाँ नहीं था। हरे नोटों में से कोई भी नहीं था। उन्हें जूलिता लगाती जाती है, जिसने सिर्फ़ एक दिन में मेरी डायरी को मुझसे पहले पढ़ने की आदत डाल ली है, और कभी-कभी तो मेरे लिखने से भी पहले। पर वह बात बाद में आएगी। क्रम से चलते हैं।



हम मंगलवार को आए थे। आज शनिवार है। मुझे इस मोहल्ले में आए चार दिन हो गए हैं और मैं एक पूरी सड़क याद कर चुका हूँ: अपनी। उसमें छह घर हैं और उनके आसपास सवालिया निशान।

किसी ने मुझसे नहीं पूछा कि मैं घर बदलना चाहता हूँ या नहीं। यह फ़ैसला बड़ों ने रसोई में कर लिया, उस आवाज़ में जो वे उन बातों के लिए रखते हैं जो पहले से तय हो चुकी हों, और मेरी मम्मी ने इसे "एक मौका" कहा, जो बड़ों का उस चीज़ को दिया हुआ नाम है जिसे लौटाया नहीं जा सकता।

सबसे ज़्यादा चोट मुझे अपना कमरा छोड़ने से नहीं लगी। चोट उस बात से लगी जो ट्रक में बैठे-बैठे मुझे अपने बारे में पता चली, जो मैं पहले नहीं जानता था: कि मैंने आज तक कोई दोस्त बनाया ही नहीं। दोस्त मेरे पास थे। ये दोनों बातें एक नहीं हैं। मेरे पुराने मोहल्ले में दोस्त फ़ैक्ट्री से बने-बनाए आते थे: तीन साल की उम्र में पार्क में तुम्हें थमा दिए जाते थे, बाल्टी और फावड़े के साथ, और उसके बाद कुछ करने की ज़रूरत नहीं रहती थी। तरीक़ा मैंने कभी सीखा ही नहीं। स्कूल में दशमलव वाला भाग सिखाया जाता है, पर दोस्त बनाना नहीं सिखाया जाता: मान लिया जाता है कि तुम उन्हें साथ लेकर ही आते हो।

तो मैंने वही किया जो मैं तब करता हूँ जब मुझे कोई काम करना न आता हो: एक प्लान बनाया।

दोस्त बनाने का मेरा प्लान:

1. नमस्ते बोलना।
2. कोई दिलचस्प बात बोलना।
3. ???

मैं पॉइंट 2 पर अटक गया; पॉइंट 3 का कुछ अता-पता नहीं। तीन दिन अटका रहा। तब मुझे यह नहीं पता था कि तीनों में सबसे आसान पॉइंट 3 ही है, और वह तीन शब्दों में समाता है।

मेरा नया कमरा भी कोई मदद नहीं कर रहा था। वह बंद डिब्बों से भरा है और उसमें मेरा अपना कुछ भी नहीं है, इसलिए मैं उसमें वैसे सोता हूँ जैसे होटल में सोया जाता है: उधार की जगह पर, कपड़े हाथ के पास रखकर। शायद इसीलिए आज सुबह मेरी खिड़की के सामने से उड़ती हुई जो चीज़ निकली, उसने मुझे इतनी जल्दी जगा दिया।

वह एक पार्सल था।

मैं बिल्कुल वैसा ही लिख रहा हूँ जैसा हुआ, क्योंकि हुआ भी बिल्कुल वैसा ही था। गत्ते का एक पार्सल, जूतों के डिब्बे जितना बड़ा, जिसके एक तरफ़ लाल मुहर लगी थी, मेरी खिड़की की ऊँचाई पर उड़ता हुआ निकला, बिना जल्दी के, जैसे कोई अपने काम से जा रहा हो। फिर एक और निकला। फिर एक और। नौ पार्सल क़तार में, बत्तखों की तरह, सड़क पार करके एक के पीछे एक सामने वाली दुकान के लेटर बॉक्स में घुस गए। (बाक़ी ग्यारह, जैसा कि मुझे बाद में पता चला, मेरे सोते-सोते ही लौट चुके थे।)

दुकान पर एक बोर्ड लगा है जिस पर लिखा है "नामुमकिन डिलीवरी"। उसके नीचे, छोटे अक्षरों में: "हम वो पहुँचाते हैं जो कोई नहीं पहुँचाता"। और उसके भी नीचे, और भी छोटे अक्षरों में, जैसे बाद में दोबारा सोचकर जोड़ा गया हो: "(लगभग हमेशा)"।

पॉइंट 2 मेरे पास था: "मैंने उड़ते हुए पार्सल देखे हैं।"

यह दिलचस्प बात नहीं है। ऐसा तो बहुत होता है।

यह नोट जूलिता ने लिखा है। उससे मैं आज सुबह ही सामने वाली दुकान में मिला था। वह हरे रंग से लिखती है, और जो वह हरे रंग से लिखती है, वह कभी मिटता नहीं। मैंने आज़माकर देखा है: रबर से, थूक से और स्वेटर की आस्तीन से, इसी क्रम में। रबर घिस गया। हरा रंग नहीं घिसा।

मैंने पजामे के ऊपर धारीदार स्वेटर पहना और सड़क पार कर ली। पजामा पहने-पहने, मेरा मतलब है। घर की चप्पलों में। कुछ फ़ैसले शरीर दिमाग़ को ख़बर होने से पहले ही ले लेता है।



अंदर गत्ते की और किसी जली हुई चीज़ की गंध थी, जैसे मोमबत्ती बुझाई गई हो। बाईं तरफ़ एक शेल्फ़ था जिस पर लाल बोर्ड लगा था, "वापस आए", और शेल्फ़ पर बीस पार्सल रखे थे, 1 से 20 तक नंबर पड़े, हर एक पर अपनी मुहर। उनके सामने बैंगनी टोपी वाली एक जादूगरनी एक-एक करके उनकी तरफ़ इशारा कर रही थीं। उनके बराबर में हरी डंगरी पहने एक लड़की उन्हें ज़ोर से गिनती जा रही थी:

"...अठारह, उन्नीस, बीस।"

"सब वापस आ गए हैं," जादूगरनी ने कहा। "फिर से।"

किसी ने मुझसे नहीं पूछा कि मैं कौन हूँ और पजामा क्यों पहने हूँ। किसी भी दुकान में यह अजीब बात होती है। उस दुकान में यह उस सुबह की सबसे अजीब बात भी नहीं थी।

जादूगरनी का नाम मारा है। उनकी नामुमकिन डिलीवरी की एक दुकान है, और एक चमकती हुई मुहर: जब वे उसे किसी चीज़ पर लगाती हैं तो नन्ही-नन्ही चिंगारियाँ उड़ती हैं, और उन चिंगारियों से उसी जली हुई चीज़ की गंध आती है। जूलिता ने मुझे समझाया कि यह सब कैसे चलता है, मेरी ही डायरी में, तीरों से भरी एक ड्रॉइंग के सहारे, जिसे मैं यहाँ छोटा करके लिख रहा हूँ क्योंकि वह आधा पन्ना घेरती है:

- पार्सल + मुहर।
- क्या पाने वाला दस्तख़त करता है, कभी न मिटने वाली स्याही से?
- हाँ: पहुँच गया।
- नहीं: सुबह होते ही पार्सल उड़कर अपने शेल्फ़ पर लौट आता है।

ऐसे कोई पार्सल खोता नहीं। और पहुँचता भी नहीं।

शेल्फ़ वाले पार्सल ही "वापस आए" पार्सल हैं: बीस पार्सल जिन्हें आज तक कोई नहीं पहुँचा पाया। और वे सब एक ही व्यक्ति के भेजे हुए हैं। हर लेबल पर, एक ही जगह, एक ही सटी हुई लिखावट में, प्रेषक के खाने में R. लिखा होता था।

“R. कौन है?” मैंने पूछा।

“कोई, जिसकी लिखावट बहुत ख़राब है,” मारा ने कहा।

और बस। उन्होंने यह बात ऐसे कही जैसे वे वाक्य कहे जाते हैं जो पहले बहुत बार कहे जा चुके हों: शेल्फ़ की ओर देखे बिना, दीवार की एक ऐसी जगह को देखते हुए जहाँ देखने को कुछ भी नहीं था। जूलिता के होंठ उनके साथ-साथ हिले। उसे जवाब ज़बानी याद था, और मुझे लगा कि उसके लिए भी यह काफ़ी नहीं था।

मारा ने उन्नीस वापस आए पार्सल एक बहुत बड़े बोरे में डाल लिए, उन बोरों में से जो कंधे पर लादे जाते हैं। उस रात उन्हें एक पियानो एक लाइटहाउस तक पहुँचाना था, बहुत दूर, और चूँकि वे निकल ही रही थीं, तो साथ-साथ उन सबको एक बार फिर आज़माना था। वे सुबह होते ही लौट आएँगी। यह उन्होंने बिना किसी उम्मीद के कहा, उस आवाज़ में जिसमें कोई आदत के मारे सूखे हुए पौधे को पानी देता है।

शेल्फ़ पर सिर्फ़ एक रह गया। क़तार का पहला। नंबर 1।

“वो वाला नहीं पहुँचाया जा सकता,” मारा ने कहा, और मुझे लगा कि यह बात वे हमसे नहीं कह रहीं। “बस एक नियम है: शेल्फ़ को हाथ मत लगाना।”

“हाँ-हाँ, बिल्कुल,” जूलिता ने कहा।

मैं उसके पीछे खड़ा था और मैंने उसकी पीठ के पीछे क्रॉस की हुई उँगलियाँ देखीं। मैंने कुछ नहीं कहा। अब सोचता हूँ तो यही वह पहली चीज़ थी जो हमने मिलकर बाँटी: दो सेकंड का एक राज़, इससे पहले कि हमें एक-दूसरे के नाम तक पता होते।

जूलिता शनिवार को दुकान में होती है। मैंने उससे नहीं पूछा कि वह मारा की क्या लगती है: भतीजी, असिस्टेंट, सज़ा। कुछ सवाल दूसरे दिन पूछे जाते हैं।

अब दूसरा दिन हो गया है। पूछो। –ज.



दरवाज़ा बंद होते ही जूलिता ने मुझे ऊपर से नीचे तक देखा। इत्मीनान से। जैसे कोई पार्सल को देखकर तय करता है कि वह मुहर के लायक़ है या नहीं।

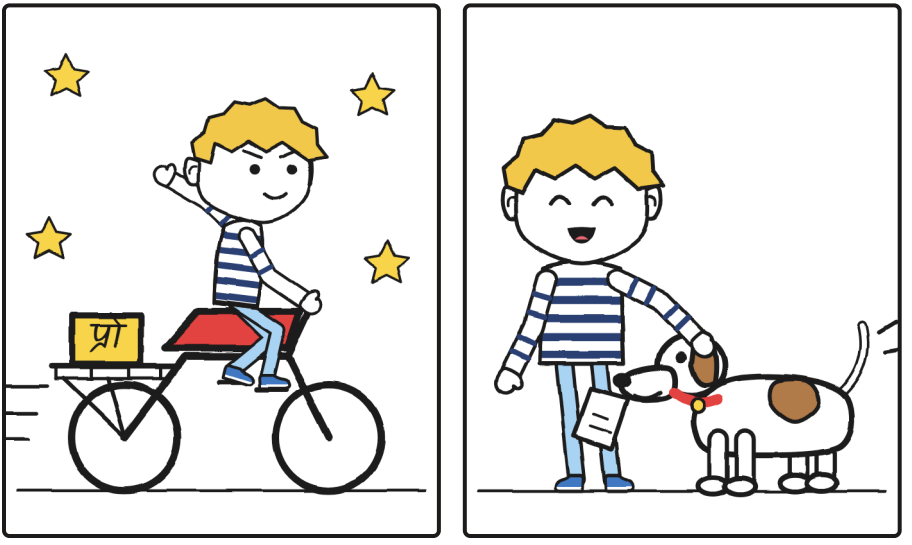
"तुम्हें डिलीवरी करना आता है?"

यहाँ मुझे ईमानदार होना पड़ेगा, क्योंकि यह डायरी निजी है और जूलिता इसे वैसे भी पढ़ेगी।

सच यह है कि मैंने अपनी पूरी ज़िंदगी में सिर्फ़ एक चीज़ पहुँचाई है: दूसरी मंज़िल वाले पड़ोसी का अख़बार, एक इतवार को, क्योंकि वह नीचे गेट पर पड़ा था और मुझे लगा कि यहाँ एक हीरो की ज़रूरत है। मैंने वह उनके कुत्ते को दे दिया। कुत्ता उसे खा गया। मेरे करियर का अंत।

और मैंने वही कहा जो दोस्त पाने की चाह में कहा जाता है:

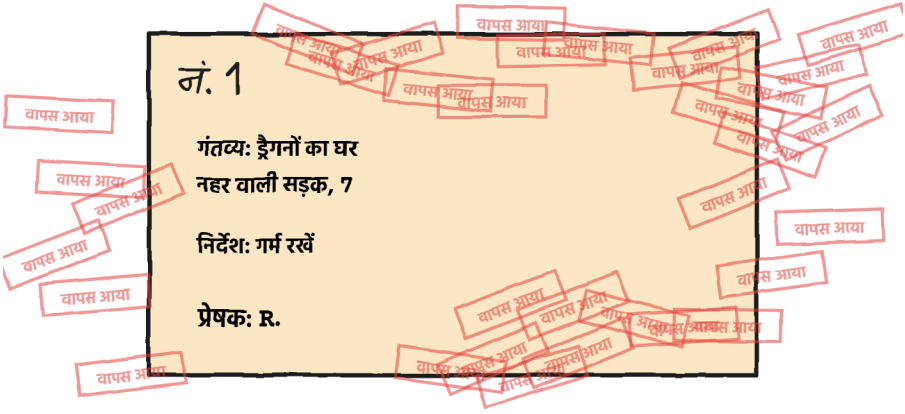
"हाँ। अपने पुराने मोहल्ले में मैं प्रोफेशनल डिलीवरी बॉय था।"



नाम का पूरोफेशनल।

झूठ उस पार्सल जैसा होता है जिस पर मुहर लग चुकी हो: बड़ी शान से उड़ता है, ज़मीन को छुए बिना सड़क पार करता है और किसी न किसी पल लौट आता है। तब मुझे यह नहीं पता था कि यह वाला कब लौटेगा, और कौन इसे ज़ोर से पढ़ेगा।

जूलिता ने मुझसे सबूत नहीं माँगे। वह सीधे शेल्फ़ के पास गई और उसने वह इकलौता पार्सल निकाला जो बचा था: नंबर 1। जो पहुँचाया नहीं जा सकता। उसके हाथ थोड़े-थोड़े काँप रहे थे, पर डर से नहीं, या सिर्फ़ डर से नहीं: यह वह कँपकँपी थी जो तब होती है जब तुम बहुत से मैच बेंच पर बैठे रहे हो और आख़िरकार कोच तुम्हारा नाम पुकार ले। मेरे हाथ भी काँप रहे थे, पर मैं उसे बेहतर छिपा लेता था: बस इतना पता चलता था कि मैंने स्वेटर उलटा पहन रखा था।



मैंने “वापस आया” की मुहरें गिनीं। सैंतीस। वह लेबल कम था, मुहर ज़्यादा।

उस सारे लाल रंग के नीचे, अगर किसी को जानना हो तो, लिखा था:

- गंतव्य: ड्रैगनों का घर, नहर वाली सड़क, 7।
- निर्देश: गर्म रखें।
- प्रेषक: R.

“अगर हमने इसे सुबह होने से पहले पहुँचा दिया,” जूलिता ने कहा, “तो मारा देख लेंगी कि मैं वापस आए पार्सल पहुँचा सकती हूँ।”

“और अगर नहीं पहुँचाया?”

“अगर नहीं, तो वह अपने आप लौट आएगा और यहाँ कुछ हुआ ही नहीं।”

मुझे यह बहुत बढ़िया प्लान लगा। इसमें वे दोनों चीज़ें थीं जो किसी भी प्लान में होनी चाहिए: कामयाब हो तो इनाम, और नाकाम हो तो कोई नतीजा नहीं। मुझे अभी तक पता नहीं था कि अंदर क्या है।



किसी ने साइकिल की घंटी बजाई। दो बार, जैसे कोई ऐसे दरवाज़े पर दस्तक दे जो उसका अपना न हो। दुकान के शीशे के उस पार हेलमेट पहने एक लड़का दिखाई दिया, पीला बैग टाँगे, जिस पर लिखा अंदर से भी पढ़ा जा सकता था: बिजली डिलीवरी। दस मिनट में या मुफ़्त।

“नामुमकिन डिलीवरी?” उसने उस लहजे में कहा जिसमें वह बोलता है जो यही मज़ाक़ दूसरे शनिवारों को भी कर चुका हो। “तुम लोगों से तो कुछ भी पहुँचाना नामुमकिन है।”

टोन्यो। बहुत ही तेज़ी से बहुत ही बोरिंग चीज़ें पहुँचाता है।

“तो आज हम यह पहुँचाएँगे,” जूलिता ने कहा और पार्सल ऊपर उठा दिया।

टोन्यो ने “ड्रैगनों का घर” पढ़ा और इतना हँसा कि उसका हेलमेट गिर गया। हेलमेट लुढ़कता हुआ दरवाज़े तक चला गया। उसने उसे हँसते-हँसते उठाया, और जब वह सीधा हुआ तो अब हँस नहीं रहा था।

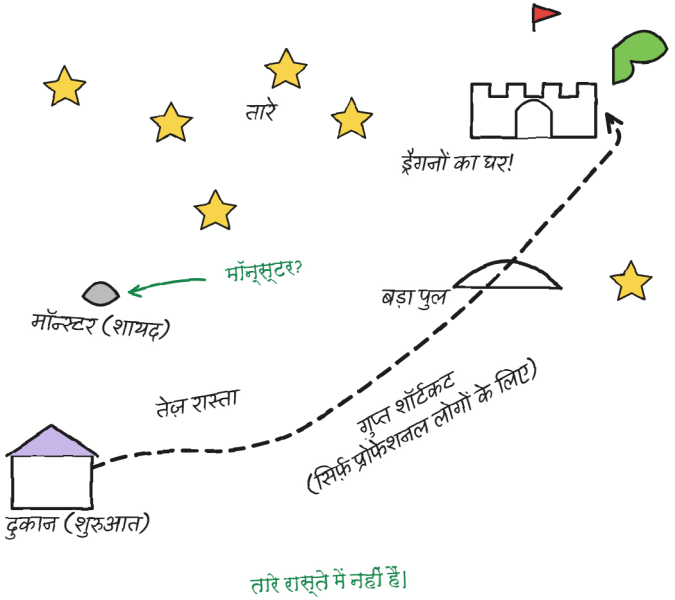
“नहर वाली सड़क पर नंबर 7 है ही नहीं,” उसने कहा। “वह 5 से सीधे 9 पर पहुँच जाती है। मुझे पता है, क्योंकि मैंने उसे ढूँढा था।”

“तुमने उसे क्यों ढूँढा था?” जूलिता ने पूछा।

टोन्यो ने हेलमेट पहना। उसने बिना किसी वजह के घंटी एक बार फिर बजाई और बहुत तेज़ी से पैडल मारता हुआ चला गया, जो टोन्यो उन सवालों के साथ करता है जिनका वह जवाब नहीं देना चाहता। मेरे हाथ दो बातें लगीं: कि उसने 7 ढूँढा था, और कि "बिजली" हर चीज़ में इतनी तेज़ नहीं थी।



मैंने डिलीवरी का नक़्शा बनाया। प्रोफेशनल डिलीवरी बॉय नक़्शे बनाते हैं, और मैंने, तकनीकी तौर पर, कहा था कि मैं एक हूँ।



नक़्शे में एक "तेज़ रास्ता" था, एक "गुप्त शॉर्टकट" (सिर्फ़ प्रोफेशनल लोगों के लिए), "बड़ा पुल", एक "मॉन्स्टर (शायद)" और छह तारे। तारों का कोई काम नहीं था। बस मुझे लगता था कि तारों के बिना नक़्शा गंभीर नक़्शा नहीं होता।

मॉन्स्टर भी रास्ते में नहीं है। मैंने जाँच लिया है। –ज.

असली रास्ते से, जिसमें तारे नहीं थे, हमने बड़ा पुल पार किया। दिन में वह नीचे रहता है और उसे हर कोई पार करता है: साइकिलें, ट्रॉली वाली आंटियाँ, बत्तख़ लिए एक आदमी। जूलिता ने उसे ठीक बीच से पार किया, मुझसे मुहर और स्याही के बारे में बहुत तेज़ी से बातें करते हुए, एक बार भी पानी की ओर देखे बिना। मैंने सोचा कि शायद इसलिए कि उसने उसे बहुत बार देख रखा है। उसकी डंगरी की जेब से रेत की एक घड़ी झाँक रही थी, जो वह काउंटर से उठा लाई थी। उससे यह पता नहीं चलता कि सुबह होने में कितनी देर है; वह बस रेत गिरते देखने और घबराने के काम आती है। मैं समझ गया कि वह उस तरह की लड़की है जो डिलीवरी पर रेत की घड़ी साथ ले जाती है। मुझे वह अच्छी लगी। मैं तो पजामा लेकर आया था।

नहर वाली सड़क, 7 कोई घर नहीं था। वह एक दीवार थी।

टोन्यो सही था: 5 के बाद सीधे 9 आ जाता था, और दोनों के बीच एक चिकनी, हल्के रंग की दीवार थी, जिसमें न दरवाज़ा था, न खिड़की, न घंटी। उसमें बस एक चीज़ थी, बहुत नीचे, लगभग ज़मीन के बराबर, किसी बहुत छोटी चीज़ की ठीक ऊँचाई पर: पीतल की एक तख़्ती, जिसमें पंजे के आकार का एक खाँचा बना था। ऊपर चार छोटे खाँचे और उनके नीचे एक बड़ा, जैसे किसी ने बहुत पहले वहाँ कोई चीज़ टिकाई हो और दीवार के पास उसकी शक्ल रह गई हो।

“शायद यह लेटर बॉक्स है,” मैंने कहा।

पार्सल उसमें नहीं समाता था। आड़ा-तिरछा करके भी नहीं। कोने से भी नहीं।

हमने वह सब आज़माया जो दीवार के साथ आज़माया जाता है:

1. दस्तक देना। (कुछ नहीं।)
2. चिल्लाना। (कुछ नहीं, बस और ज़ोर से।)

3. ऊपर से झाँकना। मैं जूलिता के कंधों पर चढ़ गया, जो दिखने में जितनी लगती है उससे ज़्यादा मज़बूत है, और सिर ऊपर निकाला। दूसरी तरफ़ एक और दीवार थी।
4. हार मान लेना। यह हमसे सबसे अच्छा बना।

बगल वाली बालकनी से एक आंटी हमें देख रही थीं, गमलों में पानी देते हुए, हाथ में पानी का मग हवा में रोके, जैसे यह फ़िल्म वे पहले देख चुकी हों।

“यह पार्सल सालों से आ रहा है,” उन्होंने कहा। “हर बार जैसा आता है, वैसा ही लौट जाता है।”

उन्होंने यह बिना किसी बुरी नीयत के कहा, जैसे मौसम का हाल बताया जाता है। फिर वे पानी देती रहीं। उस मोहल्ले में, मैं समझ गया, जो पार्सल पहुँचाया न जा सके, वह मौसम की एक और घटना भर था।



ठंड थी। नए-नए शुरू हुए पतझड़ की वह ठंड जो आस्तीनों में घुस जाती है। जूलिता ने लेबल दोबारा पढ़ा, धीमी आवाज़ में, जैसे पिछली बार के बाद वह बदल गया हो।

“‘गर्म रखें,’” उसने कहा। “और यह सालों से बर्फ़ जैसे ठंडे शेल्फ़ पर पड़ा है।”

मैं नया हूँ। अगर किसी चीज़ पर “गर्म रखें” लिखा हो, तो मैं उसे गर्म रखता हूँ। हम नए लोग निर्देश पढ़ते हैं: हमारे पास बस यही होता है, क्योंकि हमें अभी पता नहीं कि कौन-से निर्देश नज़रअंदाज़ किए जा सकते हैं। बाक़ी लोग इतने समय से एक ही जगह टिके हैं कि अब पढ़ते नहीं; वे जानते हैं। और कभी-कभी जो वे जानते हैं, वह ग़लत होता है।

मैंने पार्सल स्वेटर के नीचे डाल लिया, हमने फिर बड़ा पुल पार किया और मैं एलिया की बेकरी की जाली पर बैठ गया, जहाँ से ओवन की हवा निकलती है। जाली ज़मीन के बराबर है, दीवार से सटी हुई, और उसमें से एक गुनगुनी हवा उठती है जिसमें ब्रेड की पपड़ी की महक होती है। मैं वहीं बैठा रहा, सीधी पीठ के साथ और पार्सल पेट से लगाए, उतनी

शान से जितनी ज़मीन पर बैठे हुए, पजामे में, कपड़ों के नीचे एक डिब्बा लिए कोई रख सकता है। जूलिता ने रेत की घड़ी उलट दी और खड़ी रही, निगरानी करते हुए, कुछ कहे बिना।

तुम तो पूरेग्नेंट लेटर बॉक्स लग रहे हो।

ज़ोर से कुछ कहे बिना, मेरा मतलब है।

हम काफ़ी देर ऐसे ही रहे। ब्रेड की महक आ रही थी। मुझे पसीना आने लगा था। पसीने के बारे में न सोचने के लिए हमने बातें कीं; या यूँ कहो कि मैंने कीं, और जूलिता ने बस ज़रूरत भर जवाब दिया।

"तुम्हारे लिए यही वाला पहुँचाना इतना ज़रूरी क्यों है?" मैंने उससे पूछा। "उन्नीस और भी तो हैं।"

उसने रेत ख़त्म होने से पहले ही घड़ी उलट दी।

"क्योंकि गिनना और पहुँचाना एक बात नहीं," उसने कहा। "मैं बहुत से शनिवारों से बस गिनती ही करती आ रही हूँ।"

इसके बाद उसने मुझसे पूछा कि मेरा पुराना मोहल्ला कैसा था, और मैं सच बताने के क़रीब पहुँच गया: कि मुझे वहाँ कुछ भी करना याद नहीं, बस इतना याद है कि वह सब मेरे पास था। कि मैं रबर के मेंढक जैसा था: अभी तक बिना अपनी किसी जगह के। मैंने यह कहने के लिए मुँह खोला और मुँह से कुछ और निकल आया, कोई चीज़ मेडलों वाली मोटरसाइकिल के बारे में। उसने मेरी ओर देखे बिना सिर हिला दिया। मुझे लगा कि अब वह मेरी बात पर यक़ीन नहीं करती। उसे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था। और यही पूरी सुबह की सबसे अच्छी बात थी।

तभी किसी चीज़ ने मेरे पेट पर हल्की-सी दस्तक दी। ठक।

"क्या वह तुम्हारा पेट था?" जूलिता ने पूछा।

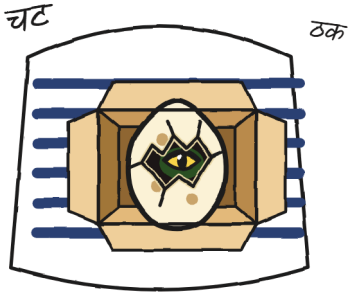
"मेरा पेट ठक नहीं करता।"

ठक। ठक।

मैंने स्वेटर हटाया। पार्सल के ढक्कन के नीचे कुछ गोल और फीका-सा था, धब्बों वाला, जो न जूतों का डिब्बा था, न ऐसी कोई चीज़ जो डिब्बों में बिकती हो। उसमें एक दरार थी जो मेरे देखते-देखते बड़ी हो रही थी।

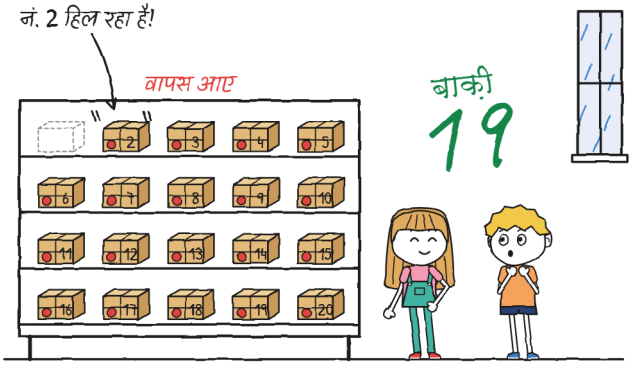
चट।

और पार्सल ने मुझे देखा।



दरार के बीच में एक पीली आँख, पूरी खुली हुई। वह जूलिता को नहीं देख रही थी, जिसे पार्सलों की समझ थी। वह बेकरी को नहीं देख रही थी, न रेत की घड़ी को, न उस आसमान को जहाँ से सुबह होते ही सब कुछ लौट आता है। वह मुझे देख रही थी। और चार दिन में पहली बार, सवालिया निशानों से घिरे घरों वाले उस मोहल्ले में, कोई इस बारे में पूरी तरह पक्का लग रहा था कि मैं कौन हूँ।

किसी ने मुझे आगाह नहीं किया था कि कुछ डिलीवरियाँ ऐसी होती हैं जिनमें पार्सल तुम्हें चुन लेता है।



मैंने उसे दो बार पढ़ा। मैं नया हूँ: मैं सब कुछ पढ़ता हूँ। और कहीं नहीं लिखा था कि बादल गरजने का इंतज़ार नीले स्टूल पर बैठकर नहीं किया जा सकता।

और बाहर बारिश शुरू हो रही थी।

मैंने मौसम का हाल देखा है। तूफ़ान आ रहा है। –ज.